

नानेह ॥ १ ॥ जन्म ॥ जीवन्मुक्ता ॥ कादृश ॥ कर्तव्य ॥ सीमा ॥ काथा ॥ कर्तव्य ॥ लन ॥ दह ॥ जति ॥ पूर्व ॥ की ॥ वा
 न्य ॥ जेवन ॥ २ ॥ ॥ गगन ॥ वरा ॥ दिक् ॥ ३ ॥ ॥ दह ॥ कर्तव्य ॥ कि ॥ नृ ॥ हा ॥ ह ॥ मिवा ॥ गते ॥ ४ ॥ ॥ जन ॥ कर्तव्य ॥ क ॥ न्मा ॥ लि ॥ सू ॥ ख ॥ ५ ॥
 खा ॥ नि ॥ उ ॥ य ॥ भा ॥ प ॥ र ॥ गा ॥ क्का ॥ नि ॥ ना ॥ द ॥ वी ॥ या ॥ गा ॥ या ॥ ति ॥ यून ॥ ६ ॥ ॥ यून ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ह ॥ य ॥ क्रि ॥ य ॥ त ॥ क ॥ र्म ॥ त ॥ न्य ॥ व ॥ ना ॥ पु ॥ गु ॥ अ ॥ न ॥ सि ॥ क ॥ स ॥ त ॥ स्य ॥
 ९ ॥ ॥ क ॥ स्य ॥ रु ॥ सी ॥ गा ॥ खा ॥ ह ॥ य ॥ त ॥ ॥ दा ॥ वि ॥ द्यु ॥ १० ॥ ॥ ख ॥ रा ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ व ॥ न ॥ य ॥ न ॥ नि ॥ व ॥ ॥ भू ॥ न्मा ॥ य ॥ ना ॥ द ॥ व ॥ क ॥ र्मा ॥ रू ॥ ला ॥ न्य ॥ ना ॥ नि ॥ द ॥ हि
 ११ ॥ ॥ नि ॥ १२ ॥ ॥ ग ॥ उ ॥ व ॥ म ॥ क ॥ स्या ॥ दा ॥ वा ॥ १३ ॥ ॥ सर्व ॥ पि ॥ सि ॥ ग ॥ जा ॥ १४ ॥ ॥ से ॥ ग ॥ त ॥ य ॥ त ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ नी ॥ वा ॥ व ॥ ॥ य ॥ कि ॥ मू ॥ ना ॥ न्य ॥ वि ॥ ॥ १७ ॥ ॥ से ॥ ग ॥ सर्व ॥ ना ॥ न्य ॥ अ
 १८ ॥ ॥ स ॥ व ॥ त ॥ य ॥ कु ॥ न ॥ स ॥ य ॥ त ॥ ॥ म ॥ ह ॥ हि ॥ स ॥ ह ॥ क ॥ र्क ॥ व ॥ १९ ॥ ॥ स ॥ न ॥ १० ॥ ॥ सी ॥ ॥ ११ ॥ ॥ द ॥ स्य ॥ रु ॥ व ॥ जी ॥ सी ॥ त्स ॥ ग ॥ य ॥ वि ॥ व ॥ क ॥ य ॥ नि ॥ र्म ॥ ले ॥ न ॥ य ॥ ने ॥ द ॥ य ॥ ॥ य
 १२ ॥ ॥ स्य ॥ ना ॥ कि ॥ न ॥ व ॥ ॥ सा ॥ स्था ॥ क ॥ र्थ ॥ न ॥ स्या ॥ द ॥ मा ॥ र्ग ॥ ग ॥ १३ ॥ ॥ या ॥ व ॥ न ॥ १४ ॥ ॥ क ॥ र ॥ त ॥ १५ ॥ ॥ स ॥ व ॥ १६ ॥ ॥ न ॥ न ॥ स ॥ य ॥ १७ ॥ ॥ गा ॥ व ॥ का ॥ स्य ॥ नि ॥ वे ॥ न्य ॥ के ॥ द ॥
 १८ ॥ ॥ य ॥ ॥ १९ ॥ ॥ क ॥ से ॥ क ॥ व ॥ १० ॥ ॥ ख ॥ द ॥ ह ॥ म ॥ पि ॥ जि ॥ वा ॥ य ॥ मू ॥ का ॥ या ॥ ति ॥ क ॥ र ॥ य ॥ वी ॥ ११ ॥ ॥ मा ॥ न ॥ पि ॥ न ॥ य ॥ ता ॥ ना ॥ स ॥ म्ब ॥ १२ ॥ ॥ के ॥ न ॥ ह ॥ उ ॥ ना ॥ १३ ॥ ॥ ख ॥ म
 १४ ॥ ॥ हि ॥ सी ॥ सा ॥ न ॥ स ॥ य ॥ स्या ॥ कि ॥ स ॥ १५ ॥ ॥ वि ॥ गा ॥ १६ ॥ ॥ त ॥ स्य ॥ त्या ॥ ग ॥ क ॥ ता ॥ य ॥ न ॥ स ॥ म् ॥ १७ ॥ ॥ ना ॥ य ॥ व ॥ १८ ॥ ॥ प्रि ॥ य ॥ ॥ १९ ॥ ॥ व ॥ स ॥ र्व ॥ १० ॥ ॥ वा ॥ ना ॥ मा ॥ ल ॥ य ॥
 ११ ॥ ॥ स ॥ क ॥ ला ॥ य ॥ दा ॥ १२ ॥ ॥ आ ॥ य ॥ स ॥ र्व ॥ या ॥ पा ॥ ना ॥ १३ ॥ ॥ सी ॥ सा ॥ र्व ॥ व ॥ ऊ ॥ य ॥ प्रि ॥ य ॥ ॥ १४ ॥ ॥ मू ॥ ख ॥ उ ॥ व ॥ १५ ॥ ॥ नी ॥ धा ॥ १६ ॥ ॥ मू ॥ खी ॥ क ॥ ता ॥ म ॥ हा ॥ वि ॥ वी ॥ १७ ॥ ॥ मू ॥ म ॥ न ॥ ख ॥ उ ॥ न
 १८ ॥ ॥ द ॥ वी ॥ सी ॥ सा ॥ ना ॥ क ॥ व ॥ त ॥ सी ॥ १९ ॥ ॥ आ ॥ दि ॥ म ॥ धा ॥ व ॥ सा ॥ न ॥ मू ॥ १० ॥ ॥ ख ॥ स ॥ र्व ॥ मि ॥ र्द ॥ य ॥ ११ ॥ ॥ त ॥ स्मा ॥ त्स ॥ य ॥ अ ॥ य ॥ सा ॥ र्व ॥ ग ॥ त्वा ॥ नि ॥ १२ ॥ ॥ स ॥ र्वी ॥ र ॥ व ॥ ॥ १३ ॥

वि

लाह नमये ४ या लो ४ दधव धा विमूयत । जीधना दिव्य सीगका । नूनन कटाचन ॥ पूरु नव विनायक स्य अत ४ स
हा दया ४ गुण ४ पूयक क रुजल वन स्य सीगन न नदि ॥ व श्रि ३ ता लो व विके से निव्यीला का विना गिना ग ४ हा रु न
विषया हा व द रु रु दियत रु व ४ मान्म लू द्या य धम माला हा हा न य ग्य नि ॥ सुख लू द्य रु था द ही य म व धी
न य ग्य नि । हिता हिता म जान का निव्य मूमा र्ज ग मिन ४ क । की दू व ल निव्य य न वू धा नि व का ४ विथ ॥ निदा दि मे थ
ना हा वा ४ सर्व धा पा लि ना स मा ४ कान वा न्मान व ४ या फा । कान रु न ४ य रु ४ विथ । य रु गे म ल मू ग र्था रु रु र्था म
था ग व वो ॥ वा लो म द न निडा र्था वि धा न मान व ४ वि • थ ॥ स्व द रु ध र्म दा ना दि नि व गा ४ सर्व जन व ४ जा य
क व रु मि य रु हा रु ता कान मा हि ता स्व स्व व र्ण ४ मा वा न नि व गा ४ सर्व मान वा ४ न जाना गि य वी ध र्म वृ धा न
ग्य नि या वी ते ॥ किया या ४ स प वा ४ क वि दू त र्था दि सी यू ता ४ ॥ पू कान से वृ ता न्मान से व रं ति व वा न का शा ना म
मा गि न सी रु ४ क र्म का लु व गा न वा ४ म कान्वा ल स हा मा डी रु मि ता क रु वि रु व ४ च क रु का य वा स धी
निय मे ४ का य लो ४ मू टा य वा क मि रु कि त व मा या वि मा हि ता ४ द रु द लु न म रु त का मू कि व वि व

ॐ

वैकिर्नाव विक्ता उदना द्युविमृगका गुमहा वसे जना हा राजना यका दां रिका रुष धा विरा ४ वम निहूनी
वला कया मय निजना नयिय ॥ र सा न जसखा सक वक्र ॥ ६ स्मीति वादिने । कर्म यारु यारु वृती तय उदय
था ॥ यहा वल्य समा ला धन तवा । अदि गव वा ४ वव नि गद्व रो या धु विव का स्म रुव नि कि ॥ मृह मार्य नना
द्युमृका स्य यदमानवा ४ मृह सव सि नी जी वा स्म कि मृका रु वि ष्य ति ॥ गीत वा ता गय स हा रु ष्य रु वः
समा पिय । निष्ट नि सूक वा या धे क्ता नी न रु रुव नि कि ॥ तलय ल्मि द का हा वा सत र व न वा सि न ४ रु विः
ता दि मृद वि ता य सा रु रु व ति कि ॥ वद नि ह द यान न्द य ॥ नि लु क सा वि का ४ जना ना यू व ना दे वि
वृषा रु रु व ति कि ॥ पा वा व ता ४ गि वा हा वा ४ य व मं थ वि वा त का ४ न यि व नि म ही ना ये या गी न रु रु
व नि कि ॥ तस्मा दि क्क क र्म ला क र्म ज न का व के । मा क्क स्य का व ल सा दा त ल्म ह्य ने कू लं ध्व नी ॥ षण्ण न म हा
कू य प ति ता ४ य ग व पी य । य न मार्य न जान ति । य लु पा सा नि य नि ता ॥ य द ल्म क्क न ल्म धा व द क्क मा ना वू त क
न ४ षण्ण मि न ग्र ह य क्ता ति ष्ट नि हि क्ता कि का ४ व दा ग म यू वा ४ रु य व मार्य न व ति य ४ वि द म्ब क स्य त स्यार्थ त स्य
वै का क्क सा वि र्ति ॥ वू दे क्क न मि द्क यामि ति वि का स मा कू लं ध्व नी ॥ नि लं थ वि र्ति य व न ल्म प वा न्म र्वा ॥ वा क्क क्क

5113

यादि८

ब्रह्मन् धर्मवत् धर्मशास्त्रिणा कथासिद्धं बौद्धं वदन्नुचिष्य
धर्मिष्वहम् ॥

नजानक्रियताएवा.भा.श्रावय

२३६५

[illegible]

रुमिरुमिदंगलं

मथादवीकूलधर्मसमूहः॥ अकलः सकलाधर्मो यः तिर्थवतादयः॥ अकलकूलधर्मो सुतणकोलाधिकवि
थ। यविगक्रियथानयसमूहवद्वक्कागा तथेवसमयाः सर्वयणीषाकूलभवहि॥ यदलीनेसर्वयाणीयदेर
क०॥ दलनानिव सर्वोलीकूलभवतथापि॥ यथाज्ञानदनाम्ब सदृशीलाहमस्मिन्० तथाचकूलधर्मः
ल समयाद्यः समारवः॥ यथासमप्रतर्ति॥ नसमाः संकायाय॥ तथेवसमयाः सर्वकूलधर्मलनासमाः
भवसर्वपथार्यदत्तसूर्यखयातथाविव। तथान्यसमयस्यान्वकूलस्यमहदकरं॥ अस्मिन्स्वेत्तमानावी० यन्
थास्मिन्। कूलनसमधर्मलुकथयततदपि॥ कूलधर्महिभाहेनथान्यवर्मेतेइमेति। सहसाधिवे
कुर्यात्सांक्षानात्त०॥ यावाकूलधिकधर्ममज्ञाना। द्यपिपियावक्तुहत्यादिकंपार्यसत्यपात्रातिग्नसं
य०॥ कूलधर्मयहवर्त्तसमावक्तुनार्कम० स्वर्तद्विपातरंगताभा। कवलसमन्त॥ दलनिष्वसुर्वविवा
संनमानवा० भाकीवरुतकोलसुसुवनसीसय० वरुतागुकिमूकनष्टमूल्यालवत्त०। नवकोलसमध
मास्मिन्। गथाकूलनायिके। यागिर्विवाशागास्याः। गीवनेवयागवान्। रागथागामूककोलेतस्मात्सर्वधि
कंपि॥ रागागागायतसाक्षात्तकसूक्तायते। भाकायतवसेसावाकूलधर्मकूलध्वी॥ वक्तुवाच्यत

१८ ७
आदिद्वयगामूनिनाकुसा कलधर्मयनाथवी मानुषयूचकागथा । विहायसर्वधर्माश्च नानाउन्मत्तानिवा । क
लमवहिजानिया यदिष्टु सिद्धिमात्मनः । पूर्वजन्मदुःखानां साकलहानयकागते ॥ मन्त्रास्त्रितयैववदु
यदशादिकविना । जन्मानुसङ्गस्यै यावद्विद्विहितागृहीतं । तामवतलरुग्जलुनूयदत्तानिनेनथकशा । लेवव
पूर्वदोर्गाङ्कगाधपण्डरीरुवे ॥ मन्त्रे विदुर्द्विद्विहस्य कलहानयकागते ॥ सर्वधर्माश्च दवे लियून । यावत्
मृगाश्च कलधर्मसिगाथव । सर्वयनिवर्तिका । यूनादुगतयादान यज्ञतीर्थजयवर्ते ॥ श्रीगणेशनाम्नै ॥ १
वी कलहानयकागते ॥ त्वमहं देवदत्तं लिखिष्ये ॥ स्य वृषा विवेचि । देवतागुन्नरकस्य कलहानयका
गते । पुद्गलस्य । नकस्य धर्मिणा गुन्नरस्य विनष्ट । अग्निपुद्गलस्य रकस्य कोलहानयकागते ॥ श्रीगणेशनाम्नै ॥
कलिकेव कलान्वये । यस्य रक्किटदागस्य कोलहानयकागते । पुद्गलविनयहर्षाद्यै ॥ सदावावददावते ॥ पुद्गला
यावत्कीर्णधर्मै ॥ कोलहानयकागते ॥ मूनहकलविहाने नतीष्टतिकदाञ्चन । तस्मान्न्यविषयवकथी कलहान
नमथादिन ॥ नक्यानिवधर्ममथाप्यनिवसासने मूला रक्षु नूय ॥ कुर्याद्विद्वताणां पमापूयात ॥ मूवाध्वे
मयावर्तकलधर्मवदयति । सगुन्ध्यापिलिख्ये यथागिला नारुवत्यम् ॥ बाधयित्वा पुनः ॥ लिखी कलधर्म

यकाग्य॥ लरुकेगावूरोसाकाथागिनीवलमलरीभूनायासनसीसार्वसागर्वतुनिष्ठति। कूलधर्मोमि
मैहात्वा मूयतनागससय॥ कूलधर्ममाहामार्तामूकियूवीयुवर्ज॥ मूविनात्राणसैयहसुसमाकोलेस
माचत्र॥ कूलधर्ममहत्तयपहुंसाकालियास्यसं॥ स्वष्टरुपायसैयकुशीमततिइर्मति॥ विहायकूल
धर्माय॥ यहुधर्मयत्रारुव॥ कनसुननत्सुकावरवहुंसमृत्यति सैयश्चकूलमलायपहुंमलान्व
थास्यस्य॥ सधन्यवागिमूष्टषर्वाहुंवागिलिष्टकत॥ कूलान्वयतिवकुत्तयथान्यान्यवमीश्चभंगताका
दिवट्टकाकामृगट्टकापवावति॥ यथेष्टजालजा लास्याकूलमवसूखावहं। हीकालादन्यसमया
कादृष्टकूलनायिकेकूलधर्ममजाननथाभाकसिद्धतिइर्मति॥ यावावावमपावैस॥ यति
योगिदुमिद्धति॥ थावान्यदगनूयश्चुकिमूकियकाकति। स्वप्नवच्चधननाम्यधनवात्सुरवयदि॥ य
कोनजगवयैकिथथायायगपावैती। नथान्यसमयस्यश्चुकिमूकियससग॥ सर्वकर्मवीहीनापिव
भूतमविवक्ति॥ कूलनिष्ठन॥ कूलधर्मातिशुकिमूक्या॥ यकाजर्न। कूलज्ञानविहीनापिकूलरक्षा
यारुव॥ सापिसर्गमिमात्राति किमूगस्यपवायग॥ कूलधर्महताहिनिवक्तानवकति। यिययुजितश्च

या

[illegible]

ब्रह्मसाधतिविद्या ॥ मुद्राव्यायुगसुदीक्षानिर्द्धृतकलमवध ॥ कलयुजावताय विस्वर्यकोलावननव ॥ य ४ ॥
कोलिककलल्लानयत्यतिनिविद्धतानयुजयतिधिकस्यतत्काकस्यवजीवितं ॥ तवन्धा ४ ॥ यत्थकमागसक
स्रवथा ४ ॥ गिन ४ ॥ तया रायवतायविकलल्लानयकागतं ॥ तं पुद्वास्माहात्मानं ४ ॥ दत्ताथस्मनवाकमा ४ ॥
यथामृत्युयगवितं कलल्लानमथादितं ॥ सर्वकृपादिगमनं सर्वगीथवगाहनं ॥ यत्सर्वयकृकवर्णं कल
धर्मपुर्वजनं ॥ यविग्निकुलीधर्मयवासूकतिनानवा ४ ॥ यून ४ ॥ जननीगहनविग्निकदावन ४ ॥ यसैल
नायितीलय ० ॥ कुलीतस्यकुलीयविरुवतित्वदनूय ॥ हा ० ॥ कलल्लस्यकुलल्लानिनान्यधर्मे ४ ॥ यथाजने ॥
कुलल्लस्यापिवतथानान्यधर्मे ४ ॥ यथा ४ ॥ जाने ॥ कलल्ल कुलनिष्ठानां कोलिकानां माहात्मनी ॥ ददाति यव
मल्लानमन्त्रकालनसैल ४ ॥ विनायासात्परुलदकांगतिं समर्यगता ॥ सुखनसर्वरुलदकोलिकायिनव
त्यह ॥ कलल्लपिहिसर्वल्लवद ॥ कुडिगपिवा ॥ वद ॥ सुगमल्लपिकुला ॥ यल्लनवही ॥ जननिकुल
महात्मीत्वदरुका ॥ जवनायव ॥ वकाला ॥ जवजानकि ॥ नान्यवन्दववानूचि ॥ कलल्लनवगुयकि ॥ सुव
कुलकथापीया ॥ मृत्या ४ ॥ कृत्याविवर्द्धक ॥ स्वायाकि ॥ समूदव ० ॥ नान्यधर्मे ४ ॥ वकल्लकोलिका ४ ॥ सावर्ध

नष्टाङ्गगायुथान्कयदत्तदात्रामादसविनः॥मानयनि सर्वस्वविवेचनं कुलधर्मनयनं॥ शिवगिरि
 धरन्तुः॥ मेहि कथागिरयः॥ गुरुस्त्वजाननिनास्ति कुलधर्मनः॥ जलमिष्टययंयानि॥ यद्विका
 शक्तिः सर्वं यत्॥ तवगकिमेयात्ताकलोकः॥ कोलायति विगः॥ तत्मात्सर्वोधिकोले सर्वसाधनं
 कथं॥ यदु
 जगन्मवकुलः॥ ध्यायिष्ये निरुवनि हि॥ तस्मात्तदात्मककोलमहकोलात्मकं यथैव दर्शनं सुखित
 श्ववरुलदत्तकदेवर्गः॥ उकिमुक्त्वा यदवावकुलं॥ तस्मिन्देवर्गपिथं॥ लाकेधर्मविन्दुपि सिद्धिजगि
 श्वरीमर्गः॥ कुलेषुमागती॥ यानिपुन्यदुरुलदयतः॥ पुन्यैवपुमानानी सर्वेषां पथमपिथं॥ डयलश्चि
 वलागम्यरुगाः॥ सर्वे तद्विकाः॥ यत्राकाकानजानीयात्तस्यकिमुक्त्वा विद्यति॥ यद्वापुन्यदुरुलदयतः॥ यदवावकुलम
 दर्शनं॥ कुलधर्ममिमं ह्यात्मा मूयन्त सर्वमानवाः॥ तिमन्वाकुलं॥ निमयात्तकविगहिनी॥ त्वत्कावृत्त्यवि
 हिनानी॥ कुलज्ञानविवाधित्वा॥ यशूनामनरिज्ञानी कुलधर्मा विगहिनी॥ तस्यजन्मानकं यथायकं तमेव॥ अधिक
 रुवः॥ नतस्यपुन्रकावृत्त्यकोलज्ञाननजायते॥ यथाधर्मेवयस्य नि सूर्यसर्वयुकागर्कः॥ तथा कुलनजाननि

का

८

तत्र माया विमाहिता ॥ गोवधेयवोधादिदर्शनान्यपिरुक्ता ॥ रुडा न मानवानि न्येव ध्याया सरुता
निवे ॥ वदन्ता गमया कला गमा केव साधने मूला निद कि हाद न म प्रियत वदर्शने ॥ गामिता ध्रुमयाः
धवीयतव ॥ अयुकादिषु कुलधर्मन जान कि वृथ हाना हिमानिन ॥ यष्टु ॥ अलि सर्वाति मयेव कः
धिता निहि ॥ मूला तरे रुव ग लेव मा रुना य इवान्मना ॥ मा हा या य य सानु ॥ तेषु वी द्वा रि जा युत ॥ तेषा हि
सर्गति नो कि कल्या का ति गते व पि ॥ पार्यमानो दि ॥ या पा न्मा कुल वेव पु व र्क त ॥ वार्यमा ॥ एपि यु ल्प
मा कुल भवावलवत ॥ कुलधर्म लय व र्क यवा ॥ सेय ति य दि न मूली या ना वरा द्या य त सि द्वि य व मा
गता ॥ यष्टु वता दि ति व ता सूत्र रा ठा रि का मु वि ॥ थ को ल भव स व क म म हा न कि इ ल ला ॥ मानवा व ह
व ॥ स कि मि थ ॥ तत्त्वार्थ या दि न ॥ इ ल ला य कुल ल नि कुल त त्व वि ल व द ॥ य थ वा ग लु वा ॥ क वि न्मान
वा ॥ कुल ना यिक ॥ दि थो ष ध न्न स व क मा हा द्या धि वि ना गने ॥ त द्या धि व र्द्ध ना य थ कूर्व कि हि क रे ष डीः

तथेव जलममयत्तु नीसीसावकी कियो ॥ समावल निसत नखी कावूत्य विवर्जिता ॥ नरुज न कूलधर्मो रुवव
 वविमावकी ॥ यथा लवनल गुता मवीवा दिलिख गुना ॥ यादार्थ न्मानवा ॥ ४ ॥ ध्यायाव न कूलनायिके रा
 मूनर्था ॥ यपि वनानि नयाव न हि कनव ॥ तथेव यलुसा मुलिकर्मा या सरुसा निव ॥ ०० तिष्टु कि मूडाहि
 तव माया विमाहिना ॥ ४ ॥ कूलधर्मनष्ट कि उ कि मूकि रुलपदी ॥ कसूवी कदमा धया कयूव वल कूया ॥
 तर्कवासे कत गु न्या मलिकाव मनीषया ॥ यथा ह ॥ दूतमनूत कव सुमपि यामवा ॥ ४ ॥ तथा कोलीन जान कि
 तलुसा द विवर्जिता मूहा मा रु स्या मा हा ल्ये तन्मा या ज नित स्य व ॥ किं उ व क्षा मिथ ध गि मा रु य द मवान पि
 थय मयी रुलेखा य समा ला सु पिया मूखी ॥ ०० ॥ य व व ल ली ज यी य वी य दी ॥ गुव कावूत्य लख स्य ०० ॥ ४ ॥ कूलदर्श
 ने नृद कानुव जान कि नत ल उ कि मूकि द ॥ गुव य द ग व हि तान जा न कि हि क व न मा रु य कि ज ना क वि स्मा य
 यूवेव माहिना ॥ इलावा य य वा सु वि द्वा य य कि हि याम वा क थं रु गारु व न्त्वा मि स व का स्य सु थ वि धा ॥ व रु

वहवः कोलिकेवर्म मिथ्या ह्यनविर्वाकाः स्ववृद्धा कथयन्तीये यावयर्थी विवर्जिताः मद्ययानमनमनूजायदि सि
द्धिलक्षतवः मद्ययानयता सर्वसिद्धिजातिसमिहिता ॥ मांसरुक्कलमाण्डयदिव्यगतिरुवः लाकानां सासि
नः सर्ववृथवकारुवकिर्कि ॥ श्रीसीरागणदवसीयदिमाक्षीवृजनिः ॥ सर्ववियजकवालाकेमूकास्यः
श्रीलिषवकाः कुलमात्ममययवी तथगतकथिर्कविः ॥ आववकिहिताथण निदितासुननिदिताः
अन्यथा कोलिकावर्मस्वावातकथितामया । विववन्मनथादवि मूढायलुगमानिनः ॥ कृपावक्षत्रागम
ना व्याधकल्वलीवनाः ॥ रुजंगक्षत्रान्नमव • अथकुलवन्मनः । वृथायानुदवलिस्त्रायाततइय
तः ॥ समहायकैः कुर्यं वृद्धादिषु निरूपिर् अमनद्ययमनालाषे मस्युर्गवायययक । मद्यमात्सेमनूना
कुकोलिकानां माहाकूले ॥ अमक्षानिदिजातीनां मद्यनकादजेवसु । द्वादशालुसूत्रामद्य सर्ववामूक
मसूतेतस्माद्वाक्कलवाजान्यावेग्यनसूत्रापिवः ॥ सूत्रादग्नितमाण्डकुर्यात्सुर्थावलाकते । तस्यालि
द्यालमाण्डपावामनुर्यवः ॥ अज्ञानस्यारुवनिम्रपाताख्ययनेदरुः ॥ द्विजानां सिंगतलुमद्ययान
विधिस्मृतः ॥ सूत्रायानकर्तृयवी । कलकीगीयूनः पिवः ॥ मूखकयोः विनिदवसूतः ॥ द्विमवाद्मूयाः ॥ म

७

द्युस्यनादिदाष्टस्ययायष्टिर्तुसंस्मृती। अरिघातं नथाह न्यादान्मार्थया। तिला ४ प्रिय। वनकनचकंधावृहिनानियधुंवा
 मलि ४॥ सीधे स्ये सिगानि इवावावागीर्य। गु। निषूजायग। अमूमनाविंग। सिताहनाव। किया ॥ सीरुर्कायापकाकाताव
 दिगाश्चोवतसमा ४ धननव। किया रुकि। खादिनाश्चायरागग ४ घातकावधवन्धस्य। मित्यकस्ति विधावध ४ सीम
 सीदर्शनद्वत्वासूर्यदशनमाव ७॥ विधिवत्सवगतयसा। कवसागल्यसीदती। नाग्यत्सववाहाने। सत्यमतद्व
 वानन ॥ वृषवायविधमन ४ दधनकदावन ४ विधिनागं द्विर्जीवाविहत्वायापेन्नलियगे ॥ वरुनागकि
 मूकनसायमर्क ४ वृषिय। जीवन्मूक ४ सुखायाय ॥ कुलगासुस्य। मपिती ४ यन्मूक। रुलेदवीकन १०
 कस्येवसीवरो। कुलरूमूर्धविख्यात ॥ हानतद्वदमूकमा ॥ कुलगासुमयेवाकी ॥ सत्येसत्येवयावृती ॥ यमाप ४
 निनसीदहानेमनथो निरुगु रि ४॥ यवताय ४ पिठय ४ मधूवातासगायन ॥ खादिश्चायमदिष्टेव कीलस
 मधूदक ॥ हिवल्यपुं स्वादित्यावधूत ४ पूरुख ४ धलु ४ सद्यादीकयतीत्याद्यायमालंगययिय ॥ वृत्तिकथिती
 किंविक्कुलमारुत्ससचिक ॥ समाभेनकुलगा निर्किखय ४ गुगुमिहसि ॥ वृत्तिदीकुला ४ वमाहावह
 श्येयथ ३ मत्व ४ सपादवकय ४ यीकुलमारुत्स ॥ कथननामद्विगीयात्तास ४॥ २ ॥ गुरुरेद्वया ॥

१०

१३

31
शीदयूवाच ॥ कूलं गच्छामि सर्वधर्मात्मा तम ८ उद्धात्राय स्य माहात्म्ये तन्मते वद मे शरु ॥
धीमरु ल्वश वाच ॥ गृह्यदवीयवश्चामियन्मात्रेयप्रियं कृ सि । तस्य गृहमागच्छेदवतासूयसीदति ॥ कस्य वित्तम
याख्यातमिति ८ पूर्वमरु ल्वरी । कथयामि तव स्मरु इह द्वा मात्रायै गृह्यप्रिय ॥ वेद गमसूयराक्षानि शुका ग्धमि कृ
लेखरी ॥ नेवाद्यागमा सर्वं वदस्ये प्रिय कीर्तिता । वदस्यातिवदस्यामि कूलं गच्छामि वाच ॥ तत्रापि वद
स्याति सुगमया मिदमं विक ॥ उद्धात्राय परीतत्वे पूर्वहृत्कात्मकं परं । सुगमपितमया यत्ना कृपानीकं कथ
याम्यहं ॥ समपवत्सूयस्य गृह्यप्रश्नश्चाया ८ समागत ८ पश्च ८ स्य गृह्यसूयस्य गृह्यप्रश्नश्चाया ८ समागत ८ प
श्च ८ पश्चिमीत्येव दक्षिणात्कवत् ॥ उद्धात्राय श्रुय ८ गे माहा मा त्मेय किर्तिता ८ आत्राया वद वस कि
उद्धात्रायानतसमा तस्मादवता वला वाह नाग काया विवावत् ८ आत्राया वद वा उ का ग्ध गृह्यमात्राय रुद
दका ८ नाद्धात्राय समकृतिस्त्यमगत्मेरु ल्वरी ॥ तस्मात्तवा वाह नाग काया विवावत् ८ आत्राया वद वा
गुफा वद वात्राय रुदजा ८ गृह्यसि कूलं समाख्याता ८ पूर्वत ८ कूलना विक । वद वात्राय रुद ८ ८ कात्राय

[illegible]

था॥ वयसानीयथा धनूर्ययथा कुरु यद्विष्णुः॥ अज्ञानमाना यथा रिशु वरुणा वा क्रोधा ववशा मनूष्याणां य
 धमराजा वयसानीयः॥ नि२४॥ आभादानानु कस्तूरी यथा कांवी प्रियथा॥ तथेव सर्वधर्माणां ज्ञानानां
 कर्मणां यथा॥ मनुष्याणां कवन्माणां मूढा यथ किं किं॥ नाना ज्ञानान्यथ कर्मरुलादया॥ उर्द्धा म्नायः
 विज्ञानियानान्यथा वीव वल्लि॥ धन्याः सनूयला कषु य ऊं न कूलदने॥ तं वलिष्य ४ कश्चिद्दृष्ट्वा म्नाय
 यव किं हि॥ न वदेत्ता गमे ४ गमे ४ यत्रा ले वरु विसृजे ४ न ययु रिन्नय ऊं न तया रिन्नवा वने ४ न त
 धनं वा नाना ४ कय को न कय ४ ना नानूपाये वणिमला वधिप्रसत्रे ४ ना म्नाया ह्यय
 गचा ४ शीम नु नू मूखा विना ४ गमे वान्व यथ कस्मात्स वरु क वू ला निधि॥ सर्वल कृण सयन मूढा म्नायाः
 थका विदं॥ तस्माद्देव धनिजा निया इद्धा म्नाय कूल न्वने ४ वने॥ लरुत किं तां सिद्धि सत्ये सत्ये वल्लनाने॥ उ
 द्वा म्नाय विज्ञाना लिय ४ सम्यग्नु नू समूखा॥ गम मा न्ते ४ समरा जीव नू कान सै सै य ४ म्ना म्नाय मी दृ गी द वी
 था ज्ञाना ति हि ग वन ४ स वन्य ४ स गुन ४ सौ र्य ४ सर्वरू सठ मनु वि० स सद्य सलु सै रु द्द स द व्य ४ स सा श्रिक ४ स

वलिसतयस्त्रीवमानुद्याताचयूजक८संवदागमभासुदि सर्वविद्याविष्णवद८आचार्यमनिमाधीन८सयगि८
 सचकोलिकसहि८सवपूणात्मासजागीसवमाधक८सत्यागिसकृतकसुसवीरकमडकम८सयव्यान्मास
 यागीक८समूक८ससदागिव८गकुरीपावनेदविषन्यासकननीसृता।तानिगातिद्वगार्थस्यामूकस्यकृति
 गान्मल८यस्याकृदगजा८सर्वपूणाकृतिगवाधवाभयस्यवासुव।लकोलडुद्धाम्नायविद८सूधी८वाकनरु
 रुवट्टिन्नाविरि८पविहयन।वकृनाएकिमूकनवाद्धीमाययवसूधी८समवर्णकीकृतीवाविदलनेवन्दन
 कथा।सीवापणवकृनागनाजमूयाधिकैरुनी॥सय • एवसमयवीगण्डीविजयाकृती।मूनामयसूदृष्टि १२
 वसूकिर्दनिनूपदवा॥गस्मादुपसाधनयाद्वाम्नायनराकम८थावकिगवदविसमप्रियतमारुव७८
 पूर्वाम्नाय८सूदृष्टिप८सुतिनूपवदकि।सीहानयेय।प्रिमदवी।वाकनानिप्ररुव७मकृथागविडंयुध
 गकियागलुदकि।८यप्रिमकमजागकृद्वानमथागकृ।थाकृव८पूर्वाम्नायस्यसीकृगण्ठुविगतिनीविशंदकि
 ताम्नायसीकृ८य८विगतिनीविगा८यप्रिमाम्नायसीकृताद्वविगकृलनायिका८साक्षातिवसूचययस्यवा

कचकुनिवृत्तं। दुर्द्धोन्नायस्यसेकगद्वाणिङ्गकूलनायेकाश्चसाक्षात्तवस्यनकिश्चिकर्मविद्यत॥ दुर्द्धोन्ना
यस्यमाहात्म्यमितिगकथितीमया। समासनकूलनिमलमाहात्म्यमूयत॥ ०० तिद्वैतमयायाकीयस्यकय
पियावैति। तद्वदामितवस्त्ररुष्टसन्धावबलरु॥ धीयासादायवामकुमुद्वोन्नाययतिस्तिरी। आवया॥ यव
माकावयावैतिसजिवस्त्रय॥ निवादिक्मियर्थक। पालिनापाववर्द्धनानिष्ठासाक्षामनूयणमन्त्रायवर्द्धन
पिय॥ अनूयामविवासायायथाकाक्षानवाष्टरी। यवायासादमन्त्रसकलायतथापीय॥ यवायासादमन्त्र
र्थस्त्रययतववाचवरी। अरिदवतावदवीगालूवृ० कथयथानिलशवीडीकूलसिलेसेवेमन्त्रावृष्टवव॥
यवा। चन्द्रात्मानलकाक्षयुथग। योजनादवशः। दधननिवस। कि० द्वालेसर्यिरुलनूवि० गार्कवायाष्ट
मधुर्यघनसाववगर्त॥ निग्रहानूयहामन्त्रयतिमायाकुदवगा॥ दय्ये। तपतिस्त्रिचक्रसमीपववर्णय
था॥ यवायासादमन्त्रायवक्रालपितथास्तिग॥ वगविडपथावृद्ध॥ सूत्रनूयणगिष्टति॥ यवायासादमन्त्राय
वक्रालपितथास्तिग॥ सूयकषूपदार्थयूसवसवृकूलेश्वरी। लवननविनाश्वइयथाशुकुन्नजायत॥

ভা
গ

यथायासादमनुलथमनुलानिमीगतं रुलेनपय रुकि मनुसकि विवर्जिता शीयसादयवामनु
 गायनियकुलध्वनि विचार्यानीहयवालीनीदर्शनान्नायरुदजानामाहाम्नायावदशसुषुविधि
 धषूव समध्यादुशरुमनुलकुलिविविधनिव ॥ सरुसीकागुथयदेवा ॥ १॥ सुषुविधि धषूव ॥
 धमनेकु मूलात्मागवमायाविमाहिता जायन्तेव नियन्तेव संसारकृत्तरागिन नलरुने हिमाक
 न्तेवत्यसाद विवर्जिता ॥ मद्रूपीणीगुनर्यस्य ॥ २॥ रुकियुजायन ॥ शीयासादयवामनुसम्यगु
 त्वापमच्यते ॥ ३॥ धर्मेजमसहस्रं (लेवादि समाया दिता ॥ ४॥ वगुनाम्नायथामनुगुर्वाह्यवर विद्यति ॥ ५॥
 सपायकचकमूला ॥ ६॥ गुहात्मागुनवत्सव ॥ शीयासादयवामनुयावन्ति समहं स्वस्वस्वाविष्णुद
 धृगकादिसूत्रपूगवा ॥ ७॥ वसूददिग्यावमनूवन्तादय ॥ ८॥ पिय ॥ मार्क ॥ ९॥ यादिमनयावनिष्ठाशाम्
 नीध्व ॥ १०॥ सनकादयश्चथागि ॥ ११॥ जीवसुकागुकादय ॥ १२॥ यदकिन्नवगन्धर्वोसिद्धिविद्याधरादय ॥ १३॥
 यासादयवामनु ॥ १४॥ पशवाकाठितरुले ॥ १५॥ पायमनुमिमीमनुष्यापिजयनपिय सामर्थ्ययुजिताः

विद्यातज ४ सोसा समागत ४ वाञ्छा स्वर्ग ४ भास्वय वाया साद जापिन ४ नृदं द्युव द्वा विष्णुनाम पिइ वायन
यद ॥ सर्वकर्म विहिना पिय वाया साद मनु विजामुखनया भितियान तासव पिधमिका ४ तस्य विक्कामलि ४
कामधन ४ कल्याणवर्ग ४ कृवल कि क्व ४ साहात्य वापा साद जापिन ४ यथायत्नमिति स्य स्याह रुव ति
का ४ चर्न ॥ यवापा साद जापीय ४ यलु ४ यलुपति ४ ४ ४ ॥ धीपा सादाय वामनुया विजानाति तत्त्व तक्षस
मवि ली ४ जानाति आचयावयति पिय ॥ यवापा सादामनु ४ स्वय ४ वापिया च्वेति दिवता स्तुय
न न कयति मादि घसं य ४ मनुमावयाव न्दिय वापाद संह क स्वययापि विम्वय क कि यून सुद्विध
न वित ॥ यवापा सादमनु ४ यत्न वातिय दी क्व ति ॥ यत्न तत्तम ह ॥ नि तथा ध्यान जयारु व ॥ दी काधू
कृत लो नियाव पय्य समवित ॥ यवापा सादमनु याव न्दिसा ह न सै सै य ॥ पावा वा वस भ गानि रुवना नि

73

۷۷

लाचल ४ स्वाहा गाय य राव वि ४ ल श्री ना वा य ला वा लि धा ता पो वा पि वा स रो अग्नि ध मा वि न्द्र ना थो य
 वी यु कि लि थो नू थो । आ ध्वा वा ध्य य ना मा नो का मा शो कु ल ध्व वी पा ला पा लो व ना जा धी धिये वि धि
 नि धे ध को सु ख इ ४ खा दि य द्द न्द द्द थ गे र व ना द य ॥ सर्वे ला ग वू व य सर्व भव म व न सी स य श य सु
 नू पा लि सर्वा ली आ व था ४ वे ण जा नि हि ॥ १०० ॥ य वा पा सा द म न्ता य त स्मा त्म द्वा न्म का रु व ७ अ
 नू य रा व ना ग म्य प रं व स्र कु ल ध्व वी । नि क रं व • क कु ल ध्व वी ॥ नि क रे नि म्मे ले नि ले नि नु लं था म
 सी ति री । नून नु म थ य नु ले म न्द वा । आ सि । ग व रं ॥ य वा पा सा द म नु लु नू न्य म न्ता य का ग गे । त स्मा
 त्म नु मि र्म द वी य वा पा सा द सी रू के ॥ य व त न्द स नू पा य स वि दान न्द व क्ता । नि व ण कि म यं वा व म
 कि उ कि य दान त ४ सर्व क र्मा पि नि ४ क र्मा ४ स पु ग ना पि नि नु लं णी पा सा द स वा म नु सर्व म न्ता नि
 ला म लि ज या उ कि थ मू किं व ल रु म ना ग सी स य । व रु ना ग कि मू क न सर्व सा व ध्व ध्व धिये ॥ धी

७५

प्रासादयवामनु ४ समा मनुन विद्यते । ॐ दभवयवी ह्यन मिदभवयवा जय ४ ॐ दभवयवी ह्यन वि
यभवयवाचनं । ॐ दभवयवादि का विदभवयवी गये ४ ॐ दभवयवी धर्म मिदभवयवी यु सते ॐ
दभवयवी यः ॐ दभवयवात्यवी ॐ दभवयवी रुत ॥ ॐ दभवयवी तत्त्व मिदभवयवी गति ॥ ॐ दभव
यवी पुष्प सत्य सत्यन सीसय ॥ ॐ ति मत्वा मनु क्वन मरिष्ठार्थ स्या सिद्धये ॥ आ गमा कृत विधिना कम
युजायुव ४ सवी ॥ प्रासादयवामनु अक्षकव नार्त जय ० मूय कवु मरु त्यादि । महा पापे व पश्च रि ४
द्विगर्त जा जय द्वी पी प्रासादयवामनु वरु नालि गिव काना धन ॥ अलि गव पि अयानि
ह्यन वालिगे न सै र्या जन ना किं न । वा द्वे के यो व म वा ल्य जा यत्त्व न्न सूर्य पिषू क म्म ना मन सा वा वाः
ह्यना ह्यन न्न न यि ॥ महा पाप क स च्छे डय पात क वा गिरि ४ मूय ग ना नु सी न्द रु ४ सत्य म न द्व वा न न
गिगर्त था जय द्व विग प्रासादयवामनु । सर्व क वुषू य न्यु ल्य सर्व दाने षू य रू ले ॥ सर्व व न वू य न्युः
ल्य सर्व ती र्थ षू य रू ले । ग रू ले रु क द वि ना ग का र्थ वि वा च ला ॥ वरु नार्त जय द्व विग प्रासादयवाम

१३

१५

चारु कल्यकाटिगतेवपि। गिरोसर्धयमारुणु सागववसूकादव०। नथागमकुमहात्मी किंचिन्
 कथितमया॥ उद्धोन्नायस्यमाहात्मी प्रीयासायवामनं॥ ०००॥ तिगकथिर्दवि किंरुय०। अगुमिच्छमि
 ॥ ०००॥ तिगि। कलार्थवमहात्मी। सर्वममाकमधायवायासादमाहात्मीनामन्तगीयात्तास॥
 प्रादयवाव॥ कुलं०। अगुमिच्छमि। प्रीयासादमाहात्मीयवात्तकी मकुवाजवद०। नसद्धधाना
 दिनि०सरु०॥ ॥ प्री००॥ अत्रवदवाव॥ नृ००॥ विषव०। मियन्मात्वेयविष्टुमि। तस्यप्रवत्तामा १०
 श०। गिवाकावपुजाय०॥ ०००॥ ति००॥ पूर्वमयायाकं मज्जाययस्यकस्यवि०। गवसं०। हा०। दा०। त्याम्य०। य
 ००॥ म०। त्या०। व०। ल०। रु०॥ य००॥ म०। त्या०। व०। ल०। रु०॥ मूनकवदुवने विनुविनुयूगान्विग०। प्रीयासादवः
 वामका०। शुकि०। मूकि०। रुल०। पद०। यवायासादमकुसुसादि०। क०। क०। य०। वरी०। पुका०। न०। न०। क०। न०। द०। य०। प०। न्वा
 लु०। न०। क०। ल०। द०। य०। क०॥ यसन्निविक्तमय स्वायसिद्धार्थनिवृपना०। पाकपापप्रसमना०। य०। प०। न्ना०। नि०

निवाचनात्। यसादकवत्। ह्युद्युपासाद मितिकथार्त्त ॥ यत्रावस्ववृत्तैश्च। त्वयमार्थयुकाशना
त्। यत्रमानेन्दुना न्यवधमतिदर्शनात्। यत्रत्वात्सर्वमनुना। यत्रगियविकिर्किर्त्त ॥ कुलमनु
मिदद्वीन्यार्त्त ॥ एवदा मिते ॥ सद्यः ॥ सात ॥ समूहय गुर्वदवान्मविर्किर्त्त ॥ कतिमूत्त पूजसाव
कृत्यादिमृगमावन। (लोवास्य) (अधनेसखास्त्रात्वा) सध्यातन्यनमावन ॥ १० ॥ एकानेद्वान्यर्त्त
ने विद्युरयनिवावर्त्त। पूजासावयवत्त ॥ त्वयमूदवर्त्त ॥ दविपूजागुताधने निवादि
एववन्दने। आयने ॥ ग ॥ कर्त्त पादवन्दन तिष्ठव ॥ पाइकास्त्रवर्त्त ॥ दिनना धवने पिय ॥ क
नाग ॥ अधनेषा ॥ मया मरुद्व ॥ म्रवत्त ॥ दिव ॥ वनेवयुर्त्त ॥ विजयर्त्त ॥ मा ॥ नका ॥ द ॥ युकावर्त्त ॥ गा ॥
लि ॥ पि ॥ कम ॥ ० ॥ से ॥ रु ॥ के ॥ ॥ व ॥ दी ॥ र्त्त ॥ यु ॥ क ॥ मू ॥ ल ॥ ॥ व ॥ रु ॥ गा ॥ नि ॥ व ॥ या ॥ र्त्त ॥ ति ॥ ॥ य ॥ व ॥ व ॥ म ॥ म्र ॥ व ॥ ॥ श्रे ॥ व ॥ व ॥ ग ॥ नि ॥ न्या ॥ र्त्त ॥ म ॥
मा ॥ व ॥ य ॥ ॥ म्र ॥ ध ॥ व ॥ र्त्त ॥ कि ॥ मा ॥ व ॥ न्य ॥ पी ॥ ० ॥ म ॥ रु ॥ क ॥ ॥ ध ॥ नि ॥ क ॥ ॥ मा ॥ रु ॥ वा ॥ र्त्त ॥ र्त्त ॥ म ॥ रु ॥
व ॥ म ॥ न ॥ न ॥ वि ॥ धि ॥ ना ॥ र्त्त ॥ व ॥ गा ॥ का ॥ ल ॥ र्त्त ॥ य ॥ ॥ ॥ यस्य ॥ क ॥ स्या ॥ पि ॥ ने ॥ वा ॥ र्त्त ॥ र्त्त ॥ व ॥ रु ॥ न ॥ रु ॥ द ॥ द ॥ म ॥ रु ॥ ॥ ॥ य ॥ प ॥ ॥ रु ॥ रु ॥

वनीमूर्ति मनुदेवतमात्रा माहाषास्त्रा कुर्यान्त्याग ४ सर्वन्यासगमात्मक ४ गणधोपवसन्तानि
 ययंव न्यासउद्योग ॥ ययंवदीयजलधि गिरिपत्तनपीठिका ४ कर्णवनाग्रमण्डपुह नदीव
 त्वावड्डिद ४ श्वेदजांठजनायध ॥ न्यासकादवीषाद ४ श्रीमायाकमलविष्णु वल्लभायध
 ती समूहगयालाका मागाकमलवासिनि ॥ नृदीवावलमायध गन्धानात्रोयलपिया ॥
 सिद्धिलक्ष्मीनाथलक्ष्मी माहावक्ष्मी त्रिप्रिता ४ गकयसु ययथर्जनी स्वनात्ममविदवगाध
 नवकृतिकलाकासा निमेषध्यासुवव ॥ घटिकावमूहकध्वयहवा दिवससुधासी १०
 ध्यानासुधाध्वेव कवानकगभवव ॥ यागश्च कवलीयक्षा मासात्राजिमगुसुधा ॥ अयन
 वत्सयर्गपलयाधयेवविदिति ४ अर्थमात्रलुकाइर्ना जिवापलु विकारति ॥ ॥ ॥ ध्वनीम
 रुवीमनि यावति सर्वमंगला दाकेलिहमवगी माहामाया मरुध्वनी मृदावाधेव नृडागा
 सर्वोत्पीयत्रमन्त्रा कात्रिकायायलीलेत्री रुवानिति मीप्रिता ४ गकय ४ स्यात्सवादीनां

[illegible]

गतं ॥ (ग) षेव पूर्ववत्प्राक् दवी जात्वा ४ पु वि न्य ॥ (छ) डो तला गली यन गु ष्क मि त्व रि धन न ४ ॥ (ल)
 षेव पूर्ववत्प्राक् उच्चा द्वा वा नि वि न्य ॥ (ग) ॥ (अ) ४ व सा ग वी ॥ (व) व व ह स्ये ह्म न सी ह्म क ॥ (ग) षेव
 पूर्ववत्प्राक् पु ष्क द ल न्य ॥ (स) लि थ क व र्ग म वि या ता र्ग स व ह स्य ता व कि या ॥ (ग) षेव पूर्ववत्प्राक् कीः
 मूला वा स्ये व न्य म लि थ ॥ (व) व र्ग य वि ह्म ता क व ह स्ये ग कि नी म वि ॥ (ग) षेव पूर्ववत्प्राक् वी स
 वि ह्म न न्य म लि थ ॥ (व) व र्ग स व्म ता क य र्ग म व ह स्ये ल नी म वि ॥ (ग) षेव पूर्ववत्प्राक् क द्र या व
 न्य म लि थ ॥ (य) व र्ग श्म म ह्म ता क का कि नी म वि • कालिक ॥ (ग) षेव पूर्ववत्प्राक् यी ता व मूल व
 वि न्य ॥ (ग) ॥ (य) व र्ग श्म उ र्ग न गु क य व शी सा कि नी म वि ॥ (ग) षेव पूर्ववत्प्राक् वि आ ह्म या वि न्य स लि
 थ ॥ (ग) व र्ग श्म ग य श्म ति गु फा गी ह्म कि नी म वि ॥ (ग) षेव पूर्ववत्प्राक् क ल ल्म ता वि न्य स लि थ ॥ (ल)
 द स न्य म हा गु क या कि नी म वि व क मा ग ॥ (ग) षेव पूर्ववत्प्राक् व ष्म न न्य स लि थ ॥ (ग) ता व मूल
 म क्ता वे उ द् व उ द् ग उ र्ग व द ॥ ना धि या ये गी य वा म्वा द वे द् द्वा य क न्य स ॥ ०० न्य वे उ व न न्या

क

१५

२१

सैमूर्तिश्याममथावदत् । केशवश्चतुष्टयका नावायनश्चमाधवः । गविन्दश्चसमयार्थे विद्वद्वत्
 समुच्चैः ॥ ५० ॥ मधुसूदनसैरुश्चस्यासि विक्रमः । वावनोऽपीधवश्चद्वितीयः । यद्गुणानामुदामादना
 वासूदवसैकैर्गुणैः ॥ यद्गुणैश्चानिबन्धकः ॥ अक्षरार्थः । गनिः । उग्रार्द्धः । नयनागथा ॥ मद्धिस्त्रय्यपितीस्रफ
 लूननृषिकनासिका । उक्ताविणीवाद्यावनी चार्कमाला ॥ ५१ ॥ नयनः ॥ अस्मिन्मालाधरायैति सीया
 काः । स्वयदवता ॥ रुवः । शर्वार्थः । वृद्धः । यष्टुयः । गिष्ठाः । प्रववव महादवगथाः । रिमः ॥ ५२ ॥ नगल्य
 वाक्यः ॥ अद्यावसंधाजगोचः । वामदवः ॥ तिथिगः । कवरुडास्त्रगवावगविमादिरुल्लपदाः ॥ ५३ ॥ क
 ध्यामस्मिन्जगत्स्थानाकुलस्यनागध्वरी ॥ ह्यानदार्ढककीवधनमानसदामवी । कलराणां च दवानां
 दवताः । स्त्रिमाः । वक्राः । पुजायनिर्ध्वः । पवमकौश्रीपितामहः । विधाताः । धविनिष्ठः । अष्टाशुचशुवान
 नः ॥ हिमव्यगर्हः ॥ न्यूकाकुमाद्रुकादथादः ॥ यद्वगिर्नज निलम्बी च जिगीतलिधविनी ॥ यशम्रा

क्षत्रालयासघोनायिका रुसिगानना । ललिताय कमावति । पाकाय कमादिदवगा ४॥ रितावमूत्रमलाक
 मना विन्दुस्वर्गकि कान ॥ वयूर्ध्वोत्तमाय कान ॥ मरुकायाननयस ७॥ सत्क (ध्या) धक यवुजानू
 जानू रघाय दध्वद को दिवामयर्थने विनयसेवमध्वनि ॥ कशलेने उयुतामती नु रावोदिक्क
 किसेयुगान् ॥ यादया ध्ववाहक (धु) यध्वक ध्वविनयसग । दध्वध्वयवुजा दिने यकि धा दीसरी
 युगान् । रितालमूलमला सिक्कणी मूत्रान्मक से यउ ७॥ आ ध्वयदाम्बाध ध्वयमनसायाय कन्य
 से ७॥ मूर्तिन्याग विधायने मनुन्यासमथाव ७॥ रिताल विद्याक मूत्रा ध्वन कनकवकादिग
 रुद ध्वयलवायका कनात्मा खिल मनुग ४॥ गगा धिदवगायि स्यात्तम कलेवरुल प्रद ४॥ मान्मे केद
 ककुरुध्वय ध्वय नमा वंदत । ध्वयुडु मित्यादि हंसादि द्विकुट्ट पूर्ववत्यन ४॥ ध्वने वउलक
 ध्ववर्मादि पूर्ववत् ॥ ध्वयुडु ध्वय ध्वय ननुयादि पूर्ववत्यन ४॥ कर्त्तव्यं वव वल क स्वन्दादि
 पूर्ववत् ॥ ध्वयुडु ध्वय ध्वय गलासादि पूर्ववत् ॥ ध्वयुडु ध्वय ध्वय वठकादि पूर्ववत् ॥ ११

ॐ नमो नमो च वृक्षादि पूर्ववत्पत्र ॥ ॐ नमो नमो च वृक्षादि पूर्ववत्पत्र ॥ गंधं दं नकादशलकी बूडादि
पूर्ववत्पत्र ॥ धर्मं यं द्वादशवर्क वात्सादि पूर्ववत्पत्र ॥ रुवं रुं गुथादशलकी लक्ष्मादि पूर्ववत्पत्र ॥ मयं
चंचुर्दशवर्क लोथ्यादि पूर्ववत्पत्र ॥ लीवं नं यंच दसलकी इन्दीदि पूर्ववत्पत्र ॥ येसे हं वादशलकी ये
नायच पाठन ॥ रुकापाखिलमनुदि धवताये सकादीन ॥ तथा रुलपुदाये वषाठन वीयूनशा ॥
अन्वाद्येन म० ४५ का मनु न्या ॥ महं म० ॥ आः ॥ वात्र लिं म० नार्हि रुक ॥ आदि मुख पूर्व ॥ निवा
धिका धं द्वाका विन्दी वे विगु कायद ॥ उत्स न्यादि वृत्रक वृनादना दानु यात्र पि ॥ कुवम पुसदं लव वि
न्याल कलनायिक गिताल मूल मनुना सर्वमनुमि कायद ॥ ॥ अथ ये पनाद्ये व द्वादय याय के न्यस
मनु मनु न्याल विधाय रुं देवतं न्याल माव ० ॥ गिताल मूल मनुना ॥ ॐ ॐ सरुस काटि व था गिनी क
लगा दानु सविगाये पदं वद ॥ निष्ठु त्या म्मा पदं दे येन म० ४० ॥ यत्र न लिय ॥ ॐ ॐ त्या गिनी ॥ तिष्ठत्या

[illegible]

ब्रह्मकुमा ॥ दक्षा रागादिवा मार्क विभ्यः सत्कृत्वा यिक ॥ एता लमूल मनुक्त सर्वदवा मिकान्क
 त ॥ आर्येयनाम्ना दवेव हृदयं द्यायकं न्यस ॥ देव न्याय विधायकं मातृका सथा व ॥ एता लमूल म
 कुक्त कवर्ग ननक काटिस्त वलिकुल स हिताये ॥ ओं कां वमी गवा पदं मून्वा दये नमः पुयात् ॥ ओं
 कां पुष्पाणी गगयने मून्वा दये गगानक काटिस्त कृत्वा दस्त हिताये गगन कुलनाथाय वव
 त ॥ ओं कं नालि कुरु ववनाथाय नमः उच्चन ॥ ववर्ग कवरी मीनां वद्वि कां वमः हृदयी ॥
 वना लमूल वद्वि कं नून्वा लपे व पूर्ववत् ॥ तवर्ग यागाव व विपुलीया लपे वद ॥ को मारी
 पि सावा स्य वद ॥ गगन वव कुको ॥ तवर्ग दिक् विम्व स रुव सिद्धाश्च वैष्णवी अयत्मा र म् सह
 न सिद्ध कां धादि पूर्ववत् ॥ यवर्ग सह नीषां रुद्विवा इत स्रव सखा प्रावा क्क सट व र हाना नक
 दि पूर्ववत् ॥ यवर्ग स्यान्निव विम्व ॥ किलि किल ति व ॥ ॐ न्दाली वट कर्म स कि लि काय विक

सूतः ॥ अथ नैऋत्यार्द्धे नक्षत्राणां मन्त्राणां नामादिवाचि ॥ चामुण्डायास्तमालीय ॥ ~~हस्तः ॥ अथ नैऋत्यार्द्धे नक्षत्राणां मन्त्राणां नामादिवाचि~~
~~मन्त्राणां नामादिवाचि~~ ॥ कायनागिवालिषट्शालकं जलवर्षाभर्मावदग्न्याश्च नक्षत्राणां
माहात्म्यं ॥ किं नोच्यते सहायकं नैऋत्ये ॥ मूलाक्षयं लिङ्गनालोत्पन्नं हतविषुद्धया ॥ अक्षयं न
तलवृषत्रयं रुद्रायै पवित्रं ॥ शिवालम्बुमन्त्राणां माहात्म्यं नैऋत्ये ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा
वे नमाद्यामकविन्यासः ॥ माहात्म्यानां कृते ॥ निकृष्टाद्वैसमाहितः ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा
यद्वै मनन्यधी ॥ अक्षयं ॥ ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥
वमानिषे मे लुपानववत्तमयः ॥ मन्त्राणां नामादिवाचि ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥
रु ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥
नक्षत्राणां मन्त्राणां नामादिवाचि ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥ अक्षयं नैऋत्ये यथा ॥

थवगागायमात्र्याग ॥ मांसीउ विविधवाकं खववजलखवव । ऊथासीरवमयवव नय्येअर्थपल्यय ॥ मां
ससीदनेवापि सूनादगनगल्ले यिठयव नय्येवूवदहि साविधियग ॥ आत्माथपातिनाहि सा कदा
नादितापिय ॥ आनिमिकेठलंकाष्टे कुदयत्त कदाचन । दवार्थयेठलं मय्ये रुत्वापायेन्नलियग ॥ म
निमिकेठलंकाष्टे पूयंरुवगि मारवि थेववयगनेदर्थ ॥ सिद्धिसेववकिर्तिता ॥ श्रीकोत्तदगनयव
शेववनेमहात्मनो गत्कर्मकुर्वतायन्मा कर्मत्राया रुवयति । गत्कर्मगय कुर्वतिसककातिमू
लीधवा ॥ रुत्वा मनु एवान्नन लरिमनेययुधि य ॥ गभयया रुते ॥ पूय वान्यथान करेयुज
उदुदुस्वय ॥ अलेहि मासितवै लिवयिहि ॥ सिक्का कुय मिद पिठु मरुस्व जिवगायउ ॥ ॥
ॐ गिमने एवान्नन लरिमनेययुधिव ॥ गभयया रुते ॥ पूय मन्यथा केनव केवउ ॥ वक्रा स्या
त्तलिने विष्णु गत ॥ अलेहि रुदय ॥ यवमा मागदानन्द तस्यासर्व मिदं विथ ॥ मा सा रा वरुनउ
न मादुकेना मने रुवा ॥ आदाय पूजयद्दवी वान्यथ निरुले रुव ॥ मत्स्या मान्य वि हि ने तस्य

नायिन गय्येय ॥ न कुर्यात्स त्स्यामान्मा न्या विना दय्येन पूजयेन ॥ यिनि ते तिलमा पुं तु तिलार्धम लि
विन्दुना सह कथिग मा पुं तु कोटिय ह्नुते रुव ॥ कूलयूजा समीना किं यूप्यमन्ये तु विद्यते ॥
तस्माद्ये ४ पूजयेत् रुक्मा लु किं मुक्तिं सरोजन ॥ अत्र श्रीगोपयोगि रुक्मा गुर्वरुकोटि द्द्वय ४ कूलयूः
जावगायक समसियतमारुव ॥ वरुणं मयि वल्लभा मां प्रमालमयि ध्वनी यं सुनि यूस कामा
नु । युजिता यं सु सिदा ॥ ॐ हामुण कूल दद्या ॥ युजिता सुवध विव । अयुजिता त्वेद वलि ४ रव
दाक वधु विव ॥ कूल पूजा न नायक यस्तु व । तिव इमं ति । सजाति नेव कथा व । एक विन
ति रि ४ सु ४ ॥ तस्मात्सर्वे पूजयेन कूलयूजा तु गारुव ॥ त्वरुग सर्व सिद्धि ४ नाग का यो विवा
आवाय धने समथ दद्याच्च नमः ॥ यादो लु मेव गं प्राति कुर्याद द्द्वय न दर्शन । सम्यक् कुरु कुरु
कय यत् ० समवा प्रयाग ॥ तत्कूलै रन रुक्मा द्द्वय ली वकु दर्शनै व द्द्वय ना केन किन्द विद्यथारुक्मा
ददा तिव ४ तत्कूलै समेवा प्राति सह कुरुवा कुमा च्चर्त्त ॥ माहाया उल दाना वि द्द्वय ली रुगयि

यागल्ललेरुं रक्काद्वत्तापीवकदर्शन ॥ साद्वणिकाठितीर्थवृत्तात्वायल्लरुं रक्काद्वत्तापीवकदर्शन ॥
 नैकत्वापीवकदर्शन ॥ वरुनकनकिन्दवियथागच्छाददातिय ४ कलावायाययज्ञार्थकलधर्म
 द्युसुधर्मवित ॥ लेवउववृवत्ताक सोधसुगगदगनिावोद्वपापुयन ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 दद्येविनाकथाग ॥ जाययज्ञार्थार्थवग निस्सलेगल्ललेरुवद्वी दूतकस्मनिगयथा ॥ यत्थेवान् ३
 धवावाह ४ प्रिया ४ स्यन्नेवहिधवा ४ तथार्थागनिवायप्रियामदविनायव ॥ समययक्रिय
 का कलायापिनिगावैयवे ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 नैकत्वापीवकदर्शन ॥ वरुनकनकिन्दवियथागच्छाददातिय ४ कलावायाययज्ञार्थकलधर्म
 द्युसुधर्मवित ॥ लेवउववृवत्ताक सोधसुगगदगनिावोद्वपापुयन ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 दद्येविनाकथाग ॥ जाययज्ञार्थार्थवग निस्सलेगल्ललेरुवद्वी दूतकस्मनिगयथा ॥ यत्थेवान् ३
 धवावाह ४ प्रिया ४ स्यन्नेवहिधवा ४ तथार्थागनिवायप्रियामदविनायव ॥ समययक्रिय
 का कलायापिनिगावैयवे ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

था गकाव विनाम्यगु नमया कथितं प्रिय ॥ यथा कुरुषु विषाणं सामयानन इष्टवर्ग ॥ मद्यया लीग था
कार्ये समये रुग्ण मन्दिरे ॥ श्रीगुरु कुल लाले सुखे सम्या गिह्यापवासना ॥ यश्च मूढा निषवत
चान्यथा यतिगारुवग ॥ अष्टकिं गुरुय किं अष्टक कादिनयुष्टव ॥ वीथा यिहि वृथा पायीथ वगा
भायमाश्रया ॥ अयम्भारु ववयवैस द्रवाम नुगर्थग ॥ यष्टुपाल विधेयित्वा वीथा यिनवक
वुष्ट ॥ अह्लाता कोलि कावात्रमय द्वाष्टुया इका ॥ यश्च कुर्यामधूमाभ्यादि तत्तृतीययसंयुवे
॥ कोलाहलान्मैष्टु निगयसुद्वयीला कामकुति ॥ समगुर्वसत कीदवी सर्वधर्मव हिष्टुग ॥ सम
यावायहीनस्य स्वेष्टवृत्ति इनात्मनशन सिद्धाति कुलेरुस ॥ अपिनवकायत ॥ यश्च साष्टु विधि
मूल्ष्टवर्गन कामवात्रग ॥ स सिद्धि मिह माष्टा तयवगुवयवांगति ॥ अष्टक्यावकमाया दीक्षासी

स्काववर्जिगशनगस्यसप्ततिष्ठापितयस्कीर्तव्यतादिषू ॥ असीस्वरीपिबहुवीचलाकात्रलमेधनः ॥
 विविहीनसमोसंवाचनवर्कवज्रग ॥ कोला ४ यलुपतास्वाप्रयकद्वयविष्ठम्बकाशाकःसीखास्त्रिया
 यावकावकिचंतिवाचन ॥ कुलदद्यात्तिसवक्तयान्यदज्ञानमात्रिगा ॥ तदंगवामसीखागस्तयानि
 पूजायग ॥ मयुक्तादिगाथायानकिश्चिदधिवलिहिमश्चानीनगयानात्थेनधर्मानवसक्तिया ॥
 नदवागगुर्व्यन्माविवाचानवकोलिका ॥ कवलेविषयाऽक्षयानथववसंगय ॥ मद्यासक
 ४ फमकधमासाशीश्रीनिसवक ॥ कोलायदऽहीवाय ४ साकरीनवर्कवज्रग ॥ असीस्कात्रीगुयालो
 त्याखमूडानिसवताकुलप्रियाङ्गस्यनिद्यगामधिगच्छति ॥ लिङ्गयविऽवहू ४ यजधवागद
 क ॥ पी ० स्नानानिवागत्यमहायज्ञवनेवज्रग ॥ तामूलाधवमावज्ञवगुगलायून ४ यून ४ विज्ञ

हृदयुलीगकि सामग्रसुखादय ॥ यामयैकैजानेस्यन्दसूधापानवतानव ॥ मधूपान मिदेषा
कृमिगरीमघपानकं पृथ्वीपृथ्वीपृथ्वीरुखाह्वानरवर्गनथागवित ॥ यवजिवलयद्विकं यवागिति
निगद्यते ॥ मसा ॐ दियेगर्गं सीयम्यात्मनिषाजयेत् ॥ मांसाहीसरुवद्वि (गवा) र्कपागघातकाः
यवगक्षान्मिधुनेसीपागमनन्दनिरुय ॥ मूकाकैमेधनीतस्मागयवसुनिषन्त्रका ॥ येज्वेवद्वः
यष्टकीउ यवद्वैलिकाकिष् ॥ गकिनीसंव ॥ कायसुसम्वद्वकिष्ठावक ॥ ॐ त्यादियश्च
मूडात्तमनसाकलनापिकं ह्वात्वा पुनर्मखाद्विय ॥ सवत्सपुमचात ॥ ॐ तितकधिने कि वि ०
कलदद्यादिलक्ष्मीसमासनकलना नि किं ह्वय ॥ (अउ) मिच्छसि ॥ ० ॥ ॐ तिगीकलाह्वयम
हवह्वयकलदद्यादिकथनाम ॥ यश्च मात्तास ॥ ० ॥ गीपावैत्युवाच ॥ कलना (अउ) मिच्छ
मिषूजकस्यववद्वगगकलदद्यास्यसेकावमच्चनवदनमयरा ॥ ॥ गीरुववावाच ॥ गृह्णद्वी

२६

अमृत्यै ॥ पृथुमाला विगानाद्युक्तनयदृश्यैर्न । कर्तुं नदीपरायक न्यामादसूगन्धितै ॥
तन्मृत्युयस्तु मोक्षार्तं ॥ आत्मा कलत्रगता ॥ धीशुभाच्चन्दनायुर्वं कलपूजासमावय ॥ आत्मा तन्मृत्यु
मनुद्वी देवदुष्टिः यस्तुमी ॥ यावन्नक्तं तदेवीतावद्वेवाचनं नृदि ॥ स्नानं नृत्नं पुष्टान्म ॥
यामोदितं पितृ ॥ यत्तु भद्रासनं तस्यासौ तमुष्टि विनीविता ॥ सीमाकनो धूरयाद्येदर्थनादलवन्तुते
विधायकं पदियादिनं पृथुमाल्यैः ॥ भक्तिः ॥ पञ्चवर्णकजिह्वा स्नानं पुष्टि विनीविता ॥ पृथुतावता
नृकावले मूर्धन्यमलोकनालिव ॥ जेमाकमेष्टिना ॥ वृत्त्यमलु पुष्टि विनीविता ॥ पूजादयनसेवाक
मूलास्तन विधान विना ॥ दत्तं यद्वनमूजाकडय पुष्टि युक्तिता ॥ पि ० यद्वैपति हाययकनीक
न्यस्तु विना मूलमर्तु ॥ दीपत्याकृत्यादद्यादकनव ॥ विवात्रेषा कृत्य दिद्वानयव पुष्टि विनीविता
॥ तस्मात्तुलमालिख विधिवन्तु पूजय ॥ अथ पुष्टि मलुलाकाले विधाय यद्यवसित ॥ पुलाय
मलुनयन मलुलेन तसदा निर्व ॥ आशान्वय ॥ अनुकामनृपववर्तु ॥ जालेधनमर्द्धवल् ॥ तिका

लंयुर्लुगि विरुव ७ मूर्यय मछलीय प्राय धर्म स्वयं कमात् ॥ गंयमर्घ्यं शवया रीवय ध्वं सामान्यं
 श्रीगुडादवी वलिषा रीवय ध्वं स्वद क्रिष्णदिचामार्कं स्वाप्याय सासननव सीयुर्मनुयुगनः
 कूलेश्वरी विधानविग ॥ गगमाष्यमानकुमसमासा विलिखिप ७ नखु ४ पय्येयिगे ४ निखेडुर्नक्षत्रगः
 ध्वं जिगे ४ रुद्रि यत्र पाण्डु सुयलं निरुलेख ७ स्वादिष्टं ध्वं दिष्टं ध्वं दधेव मृगसन्निहो ४ मः
 नाहयेमह ७ निरुलेख गय्यं रव ७ मूसिङ्ग पि वडयै कय हाद्वगकायके ॥ सुसीङ्ग सुनाया लं
 फलरुया धिनागने ॥ मूयू ४ किमी ४ धीसी रायं धर्म विद्या विवद्व ॥ मूयथा नव के जा निदागा राः
 का नसीयय ४ विनादया धिवाक्षन गस्रनं जय विथ ॥ यस्मिन् किमाहामुडासुर्षा ४ ४ खीयदयद
 नागयन विनामन्तानमकुल विसवयन सयन विना धिवा ल्क थं पूजा विधियन ॥ गत्सी ४ यानि वृत्त्यर्थ
 क्ता खोष्टु मूरवा मूजा ७ वी कलं जा कलं धाने मसु मूजा विना धिगी ॥ इयगय्यं गया गत्सी ४ यानि वृत्त्यर्थ

(गविनी। अमिसूर्यसुखविश्वरूपसचिवेशववनविमलस्यन्यथादिययवानिगा। धूमविश्वरूप
कलिनिघालिनिविस्त्रुलिगिगीसुगी४स्वरूपाकापिलाहयकयवरुअपि। अमनयोयादिवल्लुकाय
गवर्मपदाकवा॥ १० ॥ गविनीगयीनीकुसामविचिह्नलिनीवृवि४सूषुमाशंगदाविष्वावाधिनिधा
वलीकुमासोम्यावसूपदासर्वास्त्राकाद्याद(गनिगा४॥ १२ ॥ अमृगामदनापूषाउद्विपूष्विनगिह
निशासिनिचदिकाकानाअमारी४पतिप्रददा॥ यूष्ठायूष्मृगाकामदयिताकलनायिक। सीमाकाम
यदायिन्य४यगनस्त्रज४काला४॥ १६ ॥ अद्विपिदि४मृतिर्मतिर्मधकानिलश्रीदुति४स्त्रिाद्वि४सिद्धिनि
तिषाका४कचवर्तकालादग४॥ मूकात्रयरुवावमृजागा४स्य४सूक्ष्मयकला४॥ १० ॥ उत्रोवयालिनीगमनिर्गवरीव
तिकामिकावलदालोहादिनायामिदीर्घासूक्ष्मवर्तम४उकात्रयरुवाविहृजागा४स्य४सूक्ष्मयकला४॥ १० ॥ गीक
नीदारुयानिगग्यीकुकाधिनीजिया। उकात्रीमृत्पिकाययवर्तकलादग४॥ मकात्रयरुवावमृजागा४सूक्ष्मयकला४
॥ १० ॥ गवर्तस्यगम४सूक्ष्मीग। धूतात्रयसिता४काला। ध्वेष्ट्रज४सीतासिवाधनायविहृजा४॥ ४ ॥ निहृतिध्वपति

वाचविद्यानां नि कुलेश्वरी ॥ ॐ त्रिकादीपिकावापि वि कामा वि कायना सुखा सुखा मृगाह्वना मृगा
 वायायनी गथा ॥ वापिनीयामव्या ध्यातु गस्त्रजा ४ सिय ७ सदा गिवाक्काननाया च नूपराय कला ४ क
 माग ॥ १७ ॥ पथमक ॐ निर्दकगच्च दिष्टाननको श्रुतकस्तुग्रीयस्या च्चगुर्थगथयादिक ४ ॥ विष्णुर्थानि कमि
 त्यादियं च म ४ कल्याणामनूषाचगुर्नव गिमला ७ ॥ य वगावा च्चयुशगा ॥ मन्त्रेयायि च्चमेपाका नव वस्त्रवग्य
 च्चरिषा कलासरुये हिनाया ४ युशकागा ४ पृथक् ० पृथक् च्चगुर्नव गिसिद्धा कमला रु कुलना यिक
 गुरकुलकलानन्दयवापयगुधाम निस्त्रकन्द स्त्रुचम मनु निदं हि कुलना यिक ॥ मृकृतस्त्रमृगाकावा
 लुद्धह्वानवधाननी ॥ मृगीतीनिधश्च सिन्धुर्न नि किन्न पिणी ॥ गद्वये लकवग्यस्त्रु कृत्वा च्चगल्म्वरूपिणी
 ल्वायवामृगाकारं मयि विस्त्रुवर्ण कृत्वा ॥ वा रुवीयावनी ल्वामीय द्वि विन्डसमन्विता ॥ स्थिति नृपावका
 नृगहाद्वन्द्वसंकविह्वना ॥ यथा मृगी पदं कुर्याजयश्चान्ममृगा ह्वगथा ॥ मृगी गन्धरी गथे नृकायश्च

[illegible]

बोधसदागिदे ॥ गग ४ ॥ य ० समस्तचदवी मा वाहय न्येय महायज्ञवनान्कुरु कावत्तनन्द विग्रह ॥ स
 र्चरुतमागजहृदियम ॥ यवामर किं सुनरुप विवात्रसमन्विता यावस्तु योजयिष्यामि गवन्वैगनू
 स्तिनारव ॥ मन्त्रेण नवावाञ्छ समद्वीमन्यधी ॥ ध्यात्वा मूढाय ग्नाच्च न न्ययूषा कृतादि हि ॥ विनमय
 स्यापलमयस्य निरुल्लस्य ग्रीवि ॥ ४ ॥ साधूनां च हिताय यज्ञं त्वय कल्पना ॥ कुरु कुरु हितवन्निष्ठ
 अचद्वयापद्वय ॥ मल्लसंजल मूर्च्छि हृदयद ॥ कीर्तिगा ४ ॥ यमूक्तान् यदव गिजय क्रियममं निर्व
 स्वयं यद्विपरीतं कृत्वा का लुनगाजना ॥ गवा सर्वज्ञं ॥ कीर्तिपि वस्तुन सुखीयेथ ॥ तथ सर्वं गताय देवेषु
 निमोदिषूनाजना ॥ अस्मिन् यथा च दि ॥ यस्य पूजयच्च विष्णुषत ॥ साधकस्य च विष्णुसा सानि ध्यायेत्तरीरं
 गवा सयिषि विवस्ते न कथा ॥ सपाषाणं ॥ अकर्मव विनीत कपून कायवधावर्ण ॥ उर्व सर्वसमीपसे सत्य
 नमः श्रुती ॥ विनायायासनाद्वी नदया तिरुली नृणां ॥ सकली कृत्य गत्या लसुदीयानीन्द्रिया निव ॥ य
 निष्ठाया च यद्वीमन्यध निरुली रवण मन्त्रिर्न क्रियाहिर्न विध्यति कर्मदाषग ॥ न्यूनानि विक्रम
 मागिनरुली निकदाञ्च ॥ ४ ॥ यथा विधि कृता नि हि सत्कर्मोलीरुल नि हि ॥ गद्विधानकर्तृकर्म जपह

माधनादिना ॥ यवगायीतिदेखयाकन ४ कर्मरुलपदं यवस्यमनुब्रूयस्य यनुव्याफमजानक ॥ खगाच्च
नादिकसर्वं यथैरवगिर्गां रूवि । यनुमनुमयीपाकं यवगायनुवृषिनी ॥ यनुमनुमयीपाकं यवगायनुवृषिनी ॥ यनुमनुमयीपाकं यवगायनुवृषिनी ॥ यनुमनुमयीपाकं यवगायनुवृषिनी ॥
यसीदति । कामकादिद्वयं गिसर्वदृष्टानियनु ॥ यनुमिन्याहवकसिध्ववपीमतिपूजिग ४ ॥
त्रात्रमिवजिवस्यदीसीदहमिवपिय ॥ सर्वेषां नवदवानां तथयनुपनिष्ठिनी । गस्मान्मर्तु लिखद्वै व्याख्या
वायवमैगिर्व । ह्यात्राह्वमूर्खां सर्वम्यूजयद्विधिनपीय । नकपि १० पृथकयूजाविनाउर्तु कत्रागिय ४ ।
मृगवगामपि न्यक्कायवगाप्तपमाप्रयाग ॥ नकपि १० कुल ॥ निद्वेदयनुपृथकपृथकयके जदावन ॥
तां यवास्तुविधानत ४ मूवाकयवगामकि मच्चयच्चलुपवगां । उरायां लरुतं मयं मन्त्रिवश्चलमानस ४ ।
ब्रूयादिलकलं ह्यात्राह्वमूर्खां सर्वम्यूजयद्विधिनपीय ॥ विधाननाचयसायवगास्यसिदति । धातुनेत्रपेवात्रे सु
सांमसावर्तं गिर्व ॥ पूजयन्मूवमनुलग्नपूष्याकगादि रि ४ महाघाटादिगाः षयप्रिवानाः सारुवि ॥
सुतवादिनमार्कनतकमले समर्चय ७ ॥ मूधागमाकमार्कनतकमले समर्चय ७ ॥ मूधागमाकमार्कनतकमले समर्चय ७ ॥

श्वनिविन्दुमूहग। स्वपाणश्चदमश्चन्द विधिवकुलनायिकं। सहकथ्येत्तमूलस्य जह्वाभूरीचपाइकां। अ
 नक्षत्रकिमनूस्वश्च गत्यथद्वयवर्गा। अष्टुष्टौरेववोदवो मूनामावि लुकायिथ। मध्यमांउष्टया।
 गल गत्यथकुलसैरगि। अष्टुष्टानामिकायांउ वध्यकर्मोतिगत्यथ७। गऊन्येष्टया। गन गत्यथ
 द्विचालिका। कसिवांया। गन सुमन गत्यथ लिथ॥ नवैसीत्यथयद्वं गि कुलद्वयैयथाविधिशा क
 लायां विलम्ब। सामधूनुकपावैश्चउदवर्गा। दूगस्वर्गुपुत्रामनूलावसना। कृपापूर्वपाद्मिमनूलाव
 यनावलजगापिगमपि॥ नवैसीविक्वाध्वैवदीर्घं चनेवद्यमेवव। आसनेपिगतायर्गा रुक्माति
 विधिनानिव॥ कदव्यादिरुलान्यव तांनूरीचसमर्थय७॥ ॐतिगके १० गैद्वी कुलावालस्यलद
 लं। दयैकीप्रयुजादि किमन्यकुलु मिहसि॥ ॥ ॐतिकुलावुव माहावरुस्यदयसैका
 वादिकथनीनाम४४॥ ५॥ ॥ गीदेयूवाच॥ कुलेशवकुकाद्वीयवश्चामियन्माह्विष्टवि
 पृच्छसि। गस्यश्वलमार्गल गन्वह्वानयकागम॥ यावन्नीतनकेदद्यात्तावन्नेवकुलं श्रवि। उष्टानिस

सर्वं मितिमातः कमस्वर्गं ॥ नर्वसीपाथयधगिस्तुत्वा नत्वा निरुक्तिः ॥ सुधानथवता मूर्ध्नि पियविवालात्समूहः ॥
गगः सावलनयदी वित्तयद्ययान् ॥ नविताये समर्थय मूलमकुलसाधयः ॥ स्याद्वागुर्वद्विद्विगवा ॥ लिगदनेन
नैधिवमार्तगिसर्वकवः ॥ कलिवयूमर्कः ॥ एकविंशतिरिष्टवले ॥ नविकामनूनीविता ॥ समकुलाननिमाली ॥ नविकाये
समययः ॥ धेवीमूढिद्वमार्तगी ॥ ध्यायसार्ककमाहिनी ॥ ॥ ध्यानं ॥ ॥ वीनवाद्यविनादगी निवर्ती नीलीकुका
लासिनी विधाक्षीनवयावकादुव ॥ मकीर्तुकः ॥ लका ॥ दृष्टांगिगितकृत् ॥ र्विधववा मातर्ष्य पूजा कर्त्ता मार्तगीपुलताः
स्मितमूर्खिधवी ॥ एकस्यामता ॥ गगली ॥ पुनूपाय साक्षात् ॥ नविवायव ॥ कयास्यापाणमूढयसद्वातीयसमर्थयः ॥ सु
सूयदायसैयुक्ते द्विनेष्टसह पूजने ॥ मूया नवन्दनैकत्वा ॥ पियकददनूहया ॥ सद्येनाद्वयपाणु मूडाद्वत्वायसद्यतः
यथाविधि द्वितीयनृद्वियामकुमूचन ॥ पिलिषमाषमाणु मद्यैव लूकसमिर् ॥ पुनमथरुगयैतद्वगयनाथ विलेपः
धयत ॥ गल्ल ॥ लासागमहितनक्षुसन्नवदनकला ॥ गुवनिष्ठात्समाह्वययथाकल्लगयैयिथ ॥ लिष्ठायायनमादाय ॥
द्वामो कसूमादिते यथा न कि विनितात्सा विकसाथे विवर्जित ॥ सुगम्यवहिनश्चाने ॥ सुविष्मातः ॥ गने ॥ ॥ यियसमथासने

[illegible]

दूकादिसमन्वित राजवाजं न्यवाधवा भयसिद्धसर्वदा ॥ यात्रमवदूकीयव मूकप्रयागिनीवलिपू ॥ ३३ ॥
वैखानसवलिपूया ॥ दणपालीवदकि ॥ राजवाजं न्यमथ पूजयत्कन्यायिक ॥ जूगुष्टानामिका ॥ शालु
वदकदूकद्विवलिपूयागं दणयानेस्मृत ॥ गऊला मथमानानां पुष्ट ॥ ३४ ॥ आगीनिवलि ॥ जूगुष्टारिस्तु
रिदूका रतवलिपूया ॥ जूगुष्टगऊला शालु दणपालीवलिपूया ॥ जूगुष्टमथमाशालु राजवाजं न्यवस्यव
वदूकादिसमन्वित वदुनदीपान् समर्चय ॥ ३५ ॥ वयंकसूपिष्टन कुर्याद्वदंगुवनगा ॥ दीपाणमनूका का
यागिकात्मन गि ॥ रतात् कथा रथ्यादिने कुर्यान्नवसफा ॥ धर्पववा ॥ जूकसुआवदिस्तु ॥ किद्वयासितपरी ॥ विषयव
पविशाम्यकलदीपान् निवदय ॥ समस्तवकुवकुलीयूकयवीनयातिक ॥ जूलागिकमिदयवीगुहानसमासिद्धय ॥ कलद्विपय
वार्थगकिपूजासमाचर ॥ स्वगकिवीलनकिवादि ॥ कितां गुनूयिती पापयित्वापिधत्त ॥ मितिनामुष्टनिष्ठय ॥ जूदी
कितां सुयंकुर्यात् ॥ मथसक्तवकुर्वेतिमन्त्रिक ॥ मलदीकापदानेष्टुष्टारवतिनान्यथासमात्मलक्षणकिगन्धपूजादगादि
कि ॥ जूगुष्टयवतावृष्टाशागपागतिवदय ॥ तदन्तकन्यकापिपुर्तनि ॥ रुलेयवीयवतानयसिद्धति ॥ वलुलिवर्मकावि
वर्मातमायूयसीत सि ॥ स्वयंवीखटकीवैवकेवकी विषयापित ॥ कल ॥ मिदंशकं मकूलावकमूयन ॥ कदूकि ॥ लो ॥ लुकी

कृता

चोपीलसुभीविचलाजकी॥ गाय किञ्जकनिहिकगवीवसुधसुमी॥ मरुयसुसमायुका॥ समयाचालयालका॥ अकृमा नीयावग
वायूयागमूडासमाग्रित॥ पूजा कालस्वा॥ पाकासाहूयासहजावृध॥ उकाजायगलराधवावुवर्षी कृलायज॥ ७॥ खनूपातनूनी
गा॥ नकुलामूदिगी॥ वि॥ अ॥ कहीनार कियूका॥ गुर॥ अ॥ सुयथानिगी॥ ग॥ अ॥ पूलासुयासुनिबाधस्मितायियवादिनी॥ पुदूय
वगसरकासुविगाकोलिकयीया॥ विमत्सूवाविगवह्लाधवतावाधनात्सूका॥ मनाहवासमावाला॥ गकि॥ य॥ वासुलन॥ ८॥ इ॥ का॥
छायाकर्क॥ सु॥ द॥ क॥ सि॥ गा॥ इ॥ वि॥ गा॥ स॥ ति॥ इ॥ ला॥ वा॥ ला॥ य॥ वा॥ धी॥ ता॥ रा॥ व॥ ही॥ ना॥ गु॥ ला॥ ल॥ सा॥ ॥ नि॥ ड॥ रा॥ का॥ ति॥ इ॥ र्म॥ वा॥ ही॥ ना॥ गी॥ या॥ धि॥ यी॥ ति॥
गा॥ ॥ इ॥ ग॥ अ॥ इ॥ वि॥ ता॥ म॥ र्का॥ वृ॥ द्वा॥ म॥ र्का॥ व॥ रु॥ स्य॥ ति॥ अ॥ क॥ ग॥ र्का॥ क॥ सि॥ ता॥ सा॥ या॥ नि॥ ल॥ जा॥ क॥ ल॥ रु॥ पी॥ या॥ ॥ वि॥ नू॥ वा॥ म्मा॥ र्त्त॥ म॥ इ॥ द्वा॥ र्प॥ व॥ वा॥ वि॥
ह॥ ता॥ त॥ ना॥ ॥ ९॥ इ॥ गी॥ म॥ रु॥ यू॥ का॥ म्वा॥ ग॥ कि॥ जा॥ ग॥ वि॥ व॥ र्जि॥ ता॥ ॥ त॥ ना॥ च॥ ॥ अ॥ दि॥ के॥ स॥ र्वे॥ स॥ म॥ का॥ य॥ व॥ यू॥ व॥ स॥ म॥ र्प॥ ॥ अ॥ त॥ यू॥ र्वी॥ दि॥ स॥ नू॥ ना॥ म॥ रु॥ द्वा॥
थे॥ स॥ म॥ य॥ य॥ ॥ ता॥ व॥ गु॥ य॥ मि॥ त॥ ॥ पू॥ र्व॥ पा॥ न॥ वृ॥ द्धि॥ ता॥ त॥ ॥ य॥ र्प॥ रु॥ ध॥ र्मा॥ धि॥ का॥ वा॥ न॥ के॥ जा॥ प्र॥ ल॥ व॥ प्र॥ सू॥ वृ॥ कि॥ धू॥ ॥ म॥ न॥ सा॥ य॥ ग॥ ता॥ वा॥ वा॥ क॥ र्मा॥
ना॥ त॥ ल॥ य॥ र्प॥ य॥ ॥ ही॥ सा॥ र्वा॥ च॥ ता॥ ॥ य॥ ह्वा॥ मू॥ द॥ न॥ ग॥ ता॥ ॥ य॥ र्प॥ नि॥ म्ना॥ थ॥ य॥ ॥ स॥ र्वी॥ य॥ थ॥ अ॥ इ॥ की॥ य॥ रु॥ र्प॥ र॥ व॥ ॥ त॥ स॥ र्वी॥ पु॥ नू॥ य॥ य॥ न॥ य॥
स॥ म॥ यि॥ त॥ सि॥ ति॥ ॥ वा॥ रु॥ का॥ म॥ नू॥ वि॥ त्पू॥ के॥ रि॥ न॥ क॥ थ॥ क॥ न॥ यी॥ थ॥ ॥ ह्वा॥ त॥ ता॥ ह्वा॥ न॥ ता॥ वा॥ वि॥ य॥ न॥ या॥ कि॥ य॥ न॥ ति॥ य॥ ॥ त॥ व॥ रु॥ थ॥ मि॥ दि॥

कलायवायूजनात्मनःपि ॥ यद्दुर्कश्च यजन्तु कस्मात्तन्मन्त्रादिना मिषेष्टागममन्त्रे विधानेन यवगायिनी
मायूयायकिश्चिद्दुष्टासीत्तान् पूजार्थं रागहनाय ॥ नूनानियगादीयगंरुस्मात्तन्मन्त्रं कुरुते कुरुते कुरुते ॥ यद्दु
कमन्त्रास्तु वक्त्रमिष्टं कुरुते कुरुते ॥ यद्दुसमविगममन्त्रं सर्वं लक्ष्म्यसदृशं ॥ गालगयगगाद्वीकृता
र्थं वद्दुकतिव ॥ नाथश्च कपिजटाशर्करासूत्रपिंगल ॥ शिखरं गिपदीयं ॥ ह्नाला मुखपदकग ॥ ॐ मां पूजा
वलिगुक्तं कुरुते कुरुते ॥ उक्ता कुरुते मन्त्रं ॥ अर्थं च वदन्ति गिपदीयं ॥ वलिनामं न सीतुं ॥
वदुक्तं सर्वं सिद्धिदं ॥ गान्धिकागुरुमन्यी ॥ रुद्रगवगालसंविता ॥ गालगयगगाद्वीकृता ॥ सर्वं यागिनी ॥ लक्ष्म्यपद
वदुक्तं ॥ गालगयगगाद्वीकृता ॥ सर्वं रुद्रगवगालसंविता ॥ यदकृता ॥ गिपदीयं ॥ साकिनी ॥ लक्ष्म्यपद
अधिपति ॥ छेववासिनि ॥ ॐ मां वदुक्तं ॥ पूजावलिगुक्तं ॥ यद्दुगमं स्वाहा कायागिनी मन्त्रं ॥ कथितायं यागिनीनाम
रूपं ॥ यद्दुगमं ॥ याकाविजागिनी ॥ सोम्यसोम्यतवापना ॥ श्ववरी ॥ रुद्रवरी ॥ यामवरी ॥ यीगा ॥ रुद्रमसदा ॥
गालगयगगाद्वीकृता ॥ सर्वं रुद्रगवगालसंविता ॥ यदकृता ॥ गिपदीयं ॥ साकिनी ॥ लक्ष्म्यपद
वदुक्तं ॥ गालगयगगाद्वीकृता ॥ सर्वं रुद्रगवगालसंविता ॥ यदकृता ॥ गिपदीयं ॥ साकिनी ॥ लक्ष्म्यपद

दिशरुम्यरु विद्मगा ॥ यागालसीरु च निवा निवजायनरा विता । कुवाद्यासक सीखा गा ॥ सीगाद्यास्वर्ग
 सीरुगा ॥ नृयलुपीगमनसा रूगा गृह्ण निमैवलिवदं ॥ गृह्णयूम द्वि ॥ भार्य श्रुगयालमनूषिय । वरुष
 द्यादु रीपाकी सर्वसिद्धिपदायक । थासिनरुग निवोसिव रुगयालसकिर्कैल ॥ सीगार्यवल्लिदाननस
 वरुदकवाउम । तालग्यवदं दारवीयायासादयवामनू ॥ जोऊंऊं वयूमगाका रेंववा हृष्टिगायव ॥ अरुका
 नानन्दग ॥ यग्यादुदया विष्टित सिद्धार्थपदमाराय । यथा हवतवदय ॥ रुगयालपदयग्यात्यव ॥ अग्य
 दंरव ॥ कपाविसिमगत्यथा द्वावला गियदंरव ॥ स्यात्सर्वविघ्ना विपगं ॥ मा पूजावल्लिवदं ॥ गृह्णयूम
 कुर्यूम मूरुचुययूमक ॥ कलयूमीयकलयूमी सर्वविघ्नानि गियथ ॥ नागय दितय कौकी गत्य
 द्यादु मिगीवथ ॥ रुगयालायवोष ॥ रुद्र इकवगा रुवगावग्यवदं द्यादमूर्क रुगयालायव ॥ ना
 जवर्जिष्वरुमा पूजावल्लिमगंन्यरं गृह्णयूम द्वि ॥ नका च्छा विग्न कवामनू ॥ अरुनव लिदाननव

श्रीगुरुदेव पूजार्थं यूनग ४ कृतनायिका नायविद्यविद्वत्समर्पितमिति सायुष्यनिग्रय ४ पानरं रुक्तासासपया
 न क्लितिलक्षणं अविह्वय विवश्च सुसुखं वयापदायकं । विनामलुविद्वन्महासायविकीरुवलीया गयाम
 लुविधाननकलेयैकलनायिका । वृद्धयविगममृगी चिवा मिरवरुषडी ॥ यद्युपागरुवकुदकवलीले
 वादिगी विलेखागन्धु सात्रतागदीनेमयत्वेवक्षगसयत्वाचरावानीरावाद्यविगतावसा । स्वम्वानके
 विकाशय सूत्रसंनयियन ॥ गस्मादिमां सूत्राद्य वीधूर्ध्वहत्वा पिवा म्यहं मरुत्ताननयव जि मूल
 मरुत्तानमरुविगामुना कलायना कयाद पिपानिगनेष्विक्का गस्मात्तूल लिकानरुका निहृयसमपरु ॥
 कुरुया कनिविद्ववं कुरुद्वयसमरुके । मूर्धनापाशरविगी मिदकापयमा मृगी ॥ पवाहना मयवक्रो
 धानस्त्रीकृत्यवक्रग ४ उरुदेवगमलात्ता मेवसीविकथयधिया ॥ स्वायइना सपर्यक्रमूपदल पिबस्म
 धूषवर्क सिद्धिदंयाक दीपाह्वानसदा रवण पातात्यवमसा कि कौल विगतयमूकमर्क ॥ राज

५ न सोखीमवभा कस्य ता यमन कमानन ॥ ४० तिग कति किं दुष्ट ॥ कदा दिपूजने ममासन कूनं ॥ नि किं हय ॥ ५० मिह सि १०४

नानं कृतीयानं यानानं कृतीयानं विषं शुभं गीतं न द्विजानियाद्यदन्नसूत्रयासरु ॥ चर्चनं नयूगीया
नी शुभं गीतं गीतीयं ॥ चर्चनं न विनायानं कवले विषरुद्धं ॥ यानं गुणिविधं याकी दिव्यविलय
शुभं गीतं ॥ दिव्यदि या गुणपिगी वीचमूचासनं शुभं ॥ स्त्रियुया शुवलीगी पशुवानमिति विगीतु किं मुक्ति
युद्धं दि श्रीवीरमू किं यदं रुवंगायपुपानेनावकयमं वीयानरुले पिय ॥ द्विमानसवा क्रायया
वनरुवगिहमे ॥ तावत्यासकृतीयपुपागमगद्यं ॥ यावनेदियवकलीयावनामूरवविक्रिया ॥ तावदव
पिवनाद्यमन्यथायतनं रुवंगायपुपानेनावकयमं वीयानरुले पिय ॥ द्विमानसवा क्रायया
गनाकविवनद्यसमूकानागसंगय पीतापीतायूनं पीता पीतापीतायूनं पून ॥ उवायवपूनयितायूनं जल
लनविद्यत ॥ गानन्दाद्वयगदवी मूर्क्या रौववस्ययीपवनासर्वसर्वदवाद्युगसा नि विधमावत्रगदियया
नयानानां नोवेयन्मुखीकृत्या गिनी गन्मुखी सार्वशामस्य नृपत्यापिन विद्यत ॥ यश्च मुखी कृतनी हानां कृतह
द्यानिधवना ॥ पूजने सगासन कृतं ॥ नि किं हय ॥ ५० मिह सि ॥ ४० तिग कृता शुभं माहानरुहयपानवर्तुमादि

॥ कथं नमसकं न लास ॥ १ ॥